REPORT OF
THEATRE WORKSHOP AND PERFORMANCE FOR PRE SERVICE TEACHER TRAINEES OF RIE, BHOPAL

रिपोर्ट

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए रंगमंच कार्यशाला और प्रदर्शन

PAC-23.21
2023-24

Dr. Arunabh Saurabh
Programme Coordinator

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION
(National Council of Educational Research and Training)
Shyamla Hills Bhopal (M.P.)-462002

REPORT
THEATRE WORKSHOP AND PERFORMANCE FOR PRE SERVICE TEACHER TRAINEES OF RIE, BHOPAL

© RIE, NCERT, Bhopal,

Dr. Arunabh Saurabh
Programme Coordinator

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION BHOPAL
(National Council of Educational Research and Training)
Shyamla Hills Bhopal (M.P.)-462002

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है । नाटक कला और सर्जना का श्रेष्ठ माध्यम है। इस दस दिवसीय नाट्य कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल विद्यार्थियों में रचनात्मकता के विकास का भरपूर अवसर प्रदान करता है, यह कार्यशाला उन्हीं मूल्यों की तलाश है। इससे विद्यार्थियों का जीवन,कला और रचनात्मक्ता का ही सम्पूर्ण विकास नहीं होगा अपितु नाट्य-कौशल के विकास से वे बेहतर अध्यापन कला का भी विकास कर सकेंगे । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जिन पारम्परिक विविध भारतीय कलाओं के माध्यम से शिक्षा देने की बात कही गयी है इस नाट्य कार्यशाला में उनका समाहार किया गया है । इससे विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं जैसे- मौखिक वाचन और लेखनशक्ति का विकास, भावनाओं का उद्दात्तीकरण और उनका व्यक्तित्व निर्माण, विवेक सम्पन्नता और भावनात्मक अभिव्यक्ति को सही दिशा और दृष्टि प्रदान करना, नाटक की अभिनेयता से जुडकर साहित्य की अन्य विधाओं से ज्ञान अर्जित करना,नैतिक मूल्यों के विस्तार से वैश्विक मूल्यों का निर्माण करना, जीवन दर्शन का तार्किक विकास करना, पारम्परिक संस्कार तथा संस्कृति दर्शन इतिहास समाज शास्त्र से नई पीढी को अवगत कराना तथा उनके बीच उदार दृष्टि का विकास करना, साहित्यिक विकास के पठन-पाठन से भाषा के विविध रूपों तथा उच्चारण कौशल में दक्षता,) रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को पहचानना और उसका विकास करना, कल्पना लोक को तर्क संगत आधार पर रूपाकार करने की क्षमता का विकास करना, सामूहिककला और प्रदर्शनकारी कला के महत्त्व को समझना, सामाजिक संबंधों से स्वयं को जोड कर देखने की दृष्टि का विकासकरना आदि कई व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति यहाँ सम्भव है।

कला माध्यम जीवन को सुव्यवस्थित करता है, जीवन को गतिशील बनाता है।बहुलतावादी, बहुपक्षीय, और अनेकता में एकता से भरपूर, बहुसांस्कृतिक देश के मिज़ाज़ और रवायत को समझने हेतु भारत की पारम्परिक कला को समझना बेहद जरूरी है। हम भारत को समझकर भारतीय ज़मीन को समझकर सुखी,सुंदर और कलात्मक समाज बनाने में खुद को तैयार कर सकें।समझ को विकसित करने हेतु नाटक ज्ञान का एक बडा अस्त्र है और हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है- नाटक । भाषा और समझ का गहरा संबंध है। शिक्षा में समझ की जरुरत को विकसित करने की नीतियाँ एक रचनात्मक सोच का परिणाम लेकर आती है। संवेदनात्मक विकास हेतु समझ के विकास की जरुरत है. समझ विकसित होने से ही रचनात्मकता का विकास होगा इन सबके केंद्र में नाटक है !

हमारा जीवन विविधताओं का कोलाज है विविधता हमारी ताक़त है । हमारा मकसद विद्यार्थियों को सिर्फ पाठ्यक्रम में पारंगत नहीं बनाना है अपितु उन्हें बेहतर और बृहत्तर मनुष्य बनाना है। ज्ञान की उस परम्परा से जोडना है जिसमें वे तर्क,विवेक,वैज्ञानिकता और स्वस्थ रचनात्मकता के साथ गतिशील जीवन से जुड सकें। हमारे विद्यार्थी इस बात को समझें कि इस 21वीं सदी में वे भारत की ताक़त हैंऔर हमारी संस्कृति के संरक्षक भी।

-डॉ. अरुणाभ सौरभ
कार्यक्रम समन्वयक

आभार

सर्वप्रथम एनसीईआरटी नई दिल्ली का आभार। एनसीईआरटी के निदेशक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी जी का आभार, संयुक्त निदेशक प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव जी का विशेष आभार। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल का आभार जो इस पुनीत कार्य में मेरा भरपूर सहयोग दिया, संस्थान के प्राचार्य प्रो. जयदीप मंडल जी, प्रो. बी रमेश बाबू जी (अध्यक्ष शिक्षा विभाग), प्रो. आई.बी चुगतई जीका आभार। विस्तार शिक्षा विभाग की अध्यक्ष प्रो. चित्रा सिंह जी का अथाह स्नेह, सहयोग हमारी नाट्य कार्यशाला को प्राप्त हुआ है, आपका बहुत-बहुत आभार। संयुक्त निदेशक,पं.सुं.श. व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल के साथ-साथ अपने संस्थान के सभी वरिष्ठ सहकर्मियों के सहयोग से यह कार्यक्रम सम्भव हो पाता है, मैं प्रो. निधि तिवारी जी,अध्यक्ष,सामाजिकविज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग,प्रो. रत्नमाला आर्या जी ,प्रो रश्मि सिंघई, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग ,डॉ अश्विनी कुमार गर्ग जी(मुख्य सलाहकार, छात्र परिषद), डॉ. निताई चरण ओझा जी (अध्यक्ष अकादमिक शाखा, अध्यक्ष स्टूडियो) सभी छात्रावासों के अधीक्षक गण यथा श्री लोकेंद्र सिंह चौहान जी, डॉ. कल्पना मस्की जी, डॉ श्रुति त्रिपाठी जी,डॉ. संगीता पेठिया जी, डॉ. सौरभ कुमार जी, डॉ. गंगा महतो जी एवं श्री महेश आसुदानी (प्राशसनिक अधिकारी), श्री संजय गोखे जी (सुरक्षा प्रभारी) और समस्त संस्थान परिवार के प्रति आभार।

कार्यशाला के प्रथम सोपान में भीष्म साहनी रचित 'कबिरा खडा बज़ार में'का मंचन किया गया! इस कार्यशाला का निर्देशन किया श्री अविजित सोलंकी जी ने उनका और पूरी टीम का आभार!

दूसरे सोपान में अमिताभ श्रीवास्तव द्वारा लिखित नाटक 'दास्तान-ए-झाँसी' का मंचन किया गया। इस नाटक का निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया।

अंत में इस कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ. सुरेश मकवाणा जी जिन्होने हमारे साथ अथाह श्रम किया आपका विशेष आभार। इस कार्यक्रम से जुडी आकांक्षा सिंह सहित सभी विद्यार्थियों का आभार।

-डॉ. अरुणाभ सौरभ

Theater Workshop : Phase-I

Activity I Date 01.07.2023 – 10.07.2023
Date of performance: 11.07.2023

Report on Theatre Workshop

Introduction

Regional Institute of Education (NCERT), Bhopal conducts a 10 days theatre pedagogy workshop for integrated B.Ed. M.Ed. Ist Semester Integrated Course. Into which they invite a group of professional trainers to teach the fundamentals of theatrical art of different types such as acting, background music, stage management, direction, lights, makeup, dressing, dialogue writing, dance choreography and many more things. Besides of which students of respective class have to prepare a drama/skit within the duration of these 10 days and to perform it. To represent and improve the skills they have learnt in these past 10 days. This workshop also has an educational value and also important for academic purpose.

Theatre Pedagogy

In an international context, the term "theatre pedagogy" may appear somewhat awkward; however the term makes clear this subject's relation to the art form of theatre and its central significance in terms of contemporary developments in educational theatre here in Germany. **Theatre pedagogy** is an independent discipline combining both theatre and pedagogy. As a field that arose during the 20th century, theatre pedagogy has developed separately from drama education, the distinction being that the drama teacher typically teaches method, theory or practice of performance alone, while theatre pedagogy integrates both art and education to develop language and strengthen social awareness.

Kabira Khada Bazaar Me

Kabira Khada Bazar unconcerned, determined and fierce - in short Mastmaula - Kabir's personality has influenced India's mind and soul for centuries. This is the reason why Kabir's verses have been on the lips of Indians for five hundred years and so many stories about him are well known. This person, who tirelessly fought against the dictatorship, bigotry, extravagance and misconceptions of his era, is still established among us as a permanent and inspiring value. This is the second play-creation after Hanush by well-known progressive story writer Bhishma Sahni, which has received wide acclaim on Hindi theatre. Kabir's raucous fun, ruthless arrogance and epoch-making thinking are present in this work with full vitality. Along with this, it has also been revealed that Kabir's literature was only a medium to break social inertia, with the help of which he fought on many fronts. While going through the work, the reader easily connects this struggle of Kabir with the various distortions of the contemporary Indian society, despite all its contemporary sociality. In short, this play by Bhishma Sahni makes Kabir struggling in the medieval environment - including his family and social context - relevant even today.

A 10 days workshop on Theatre was organized by Dr. Arunabh Saurabh and OTHER Theatre group Bhopal in RIE Bhopal from 21/01/2023 to 01/02/2023. The artist who conducted the workshop is Mr. Avijit Solanki, a Writer, Director and an Actor who completed his one year diploma from Ist batch of MP School of Drama and Bachelor in Direction from National School Of Drama Delhi. He is the founder of OTHER THEATER, a group of theatre enthusiasts. The workshop consisted of three main wings of theatre, namely: writing, directing and acting which were the topics he mainly focused on.

The event started with an ice breaking session which was interactive and full of energy. The speaker advised on the three wings of a Drama - Writing, Directing and Acting. Writers were provided with a clear image

on how to compose a story and basic ideas and division of a script. For the directors, he introduced composition of the shots and the essence of creating suspense by controlling what the audience sees. For the actors, he explained the importance of eye movement, facial expressions and body language. They divided us into small groups and gave us a home work to prepare a 5 minute skit for audition purpose. Students also started to read the script of play. Randomly many students read the various characters so that Director can shortlist the candidates for various roles.

Ms. Asfiya Jamal, a researcher of Anthropology and theater for her doctorate from Frankfurt University also joined for the purpose of data collection and as assistant director of the play.

On second day music director Mr. Abhishek Dube with his team Mr. Sanjay and Mr. Deepak Nema told about the importance of music into the drama or film making. He started with basic practice of 'Sa' and students learn many exercises that helped them to improve their voices and opened their vocal chords. Also he teach a song that is "**Moko kaha dhundhe re bande**" of Saint Kabirdas who is the central character of the play. Students further read the script of play that was remaining on first day.

On third day Mrs. Sapna Yadav and Mr. Badal Pratap Singh joined the workshop and told students a lot about dances and their benefits in daily life and how important they are in drama. Then students did a variety of exercises. These exercises helped them to control our body movements. After it students went for script reading and the director's team went for auditions.

On day four Ms. Jagrati Gupta and Ms. Pooja joined us and they told us about the importance of costume, dresses and role of makeup respectively into a drama. After that students start practicing their scenes and remaining students which were selected as actors joined the music pit and costumes department as per their interest. They provided equal opportunity to each student to perform. Simultaneously students prepared one more song "**Jhini jhini bheeni chadariya**" of Saint Kabirdas for the play.

On fifth day of workshop the script was almost ready after a lot of editing. Mr. Shahanshah Ahmed joined and teaches students about different props and stage management. Students further prepared their scenes and practiced in singing chorus. They add a new song "**Anhad ka baaja**" of Vidhyapati.

For day six and seven students prepared all the acts of play and filled them with dance and music. They made different type of formations. Students prepared two or three more songs such as "**Nirbhay Nirgun Gun Gaunga**" of Saint Kabir and one of his friend Raidas that is "**Bhala hua mori Gagari footi**" and a regional marriage song required in one scene of play.

On eighth day, the practice of play was almost completed and a new member Mr. Praveen Namdev joined us and he told about how to use lights into a play and its significance in the drama. Also students tightened some of the loose ends of drama and prepared formations of dances.

On ninth day students practiced tightly, dresses and costumes were distributed to everyone so that they can check whether it is perfect or not. Students practiced a lot and removed small errors of the different scenes. Some of students prepared props, others prepared certificates and few of them prepared invitation posters and brochure of the drama.

On the last day of workshop we finally moved to the place where students are going to perform so that we have an idea of length and breadth of stage. Students practiced hard there for last two time, removing errors and improving themselves.

The play began at 5:00PM on 1st july, 2023 in *NINAAD AUDITORIUM OF PANDIT SUNDARLAL SHARMA CENTRAL INSTITUTE FOR VOCATIONAL EDUCATION(PSSCIVE))*, SHYAMLA HILLS BHOPAL with an audience of above hundreds of students, faculty and guests. Everybody enjoyed the play a lot it was a successful play performed by the students of integrated B.Ed. M.Ed. 1stsem and guided by Dr. Arunabh Saurabh and OTHER THEATRE, BHOPAL. Program ended with certificate distribution, speech of principal sir followed by Director of the play and vote of thanks.

रंगमच शिक्षणशास्त्र कार्यशाला रिपोर्ट

रंगमच शिक्षणशास्त्र रंगमंच शिक्षा से अलग विकसित हुआ है, इस अंतर के साथ कि रंगमंच शिक्षक आमतौर पर अकेले अभिनय की विधि, सिद्धांत और अभ्यास सिखाता है। इसके विपरीत, रंगमच शिक्षणशास्त्र सामाजिक जागरूकता को विकसित करने और मजबूत करने के लिए कला और शिक्षा को एकीकृत करता है।

शैक्षणिक रंगमंच का उपयोग करना एक आधुनिक दृष्टिकोण है और विशेष रूप से छात्रों के लिए आकर्षक है। नाट्य अभ्यास शैक्षणिक पद्धति की एक संपत्ति है जो छात्रों को सूचना के केवल रिसीवर के बजाय उनके सीखने के खोजकर्ता बनने की अनुमति देता है। रंगमंच के माध्यम से, छात्र वर्तमान से विद्यालय के अतीत के अध्ययन को बढ़ावा देते हैं।

शिक्षा में शैक्षणिक रंगमंच ने शिक्षक प्रशिक्षुओं और युवाओं के लिए एक सीखने का माहौल प्रदान किया है, जहां वे उठाए गए मुद्दों के बारे में सोच सकते हैं और अपने लिए कार्यों के परिणामों की जांच कर सकते हैं।

रंगमच शिक्षणशास्त्र ने खुले और संवादी समुदायों के भीतर प्रदर्शन कलाओं के अभ्यास और शिक्षणशास्त्र को प्रतिबिंबित किया और विकसित किया। रंगमंच ने आलोचनात्मक, अभिनव सोच, बहु-विषयक बातचीत, बहु-कलात्मक सहयोग और एक प्रयोगात्मक दृष्टिकोण की ओर मार्गदर्शन किया। प्रोग्राम की नींव व्यक्तिगत अनुभव और धारणाएं हैं, जिन्हें अन्य छात्रों, शिक्षकों और कला शिक्षाशास्त्र के अकादमिक क्षेत्र के साथ खुली बातचीत में लाया जाता है।

कबीर का चरित्र, युवा लोगों और दर्शकों को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो लोगों को कबीर के शैक्षिक संदेशों को उनकी सोच में शामिल करने में मदद कर सकता है। रंगमंच शिक्षण शास्त्र दुनिया की समझ में बदलाव लाना चाहता है, खासकर बच्चों और युवाओं के बीच। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, गैर-मौखिक और गैर-लिखित भाषा विकसित

करने, नाटकीय कौशल और नाटकीय शब्दावली का सम्मान करने और समुदाय में समस्याओं को दूर करने के लिए सामूहिक कार्रवाई का उपयोग करने सहित कई अन्य कौशल सिखाए और सीखे गए।

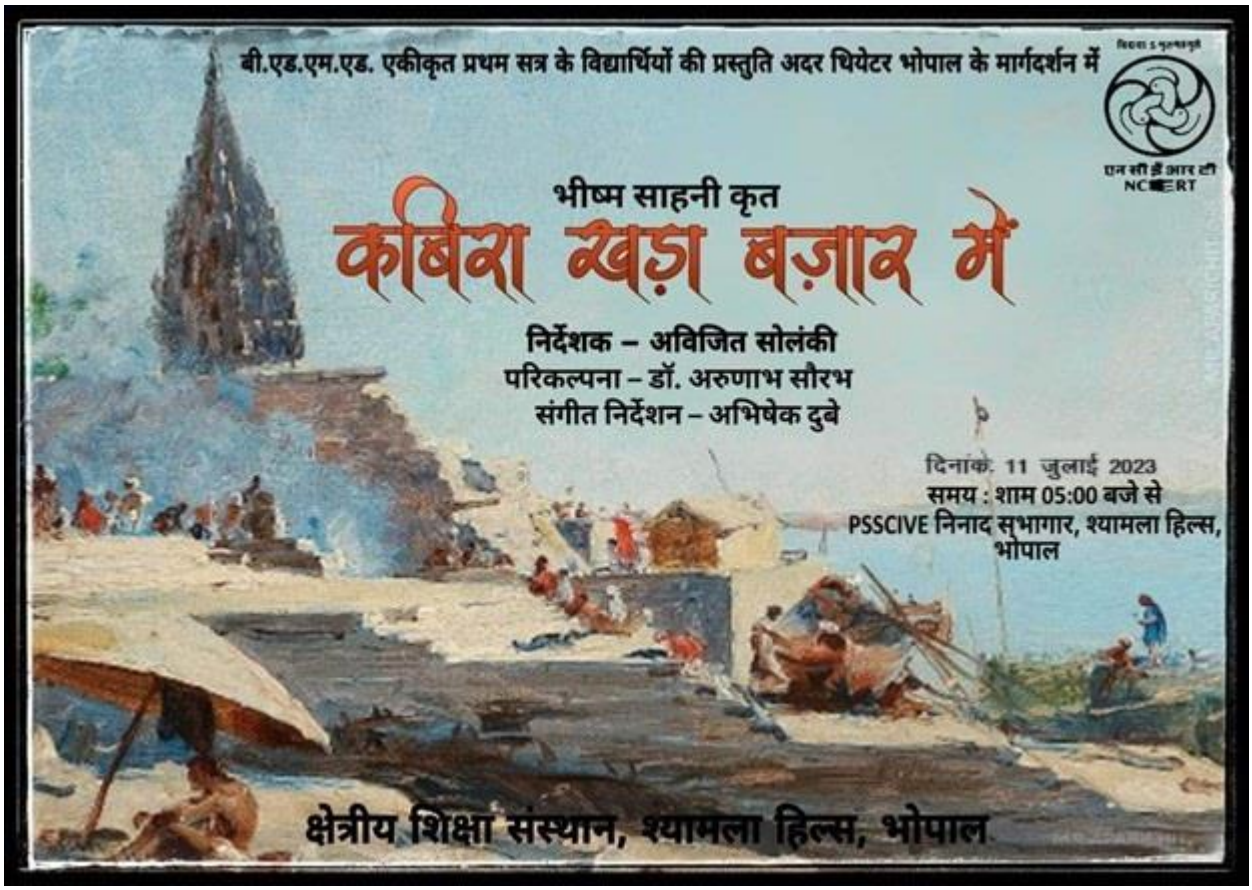

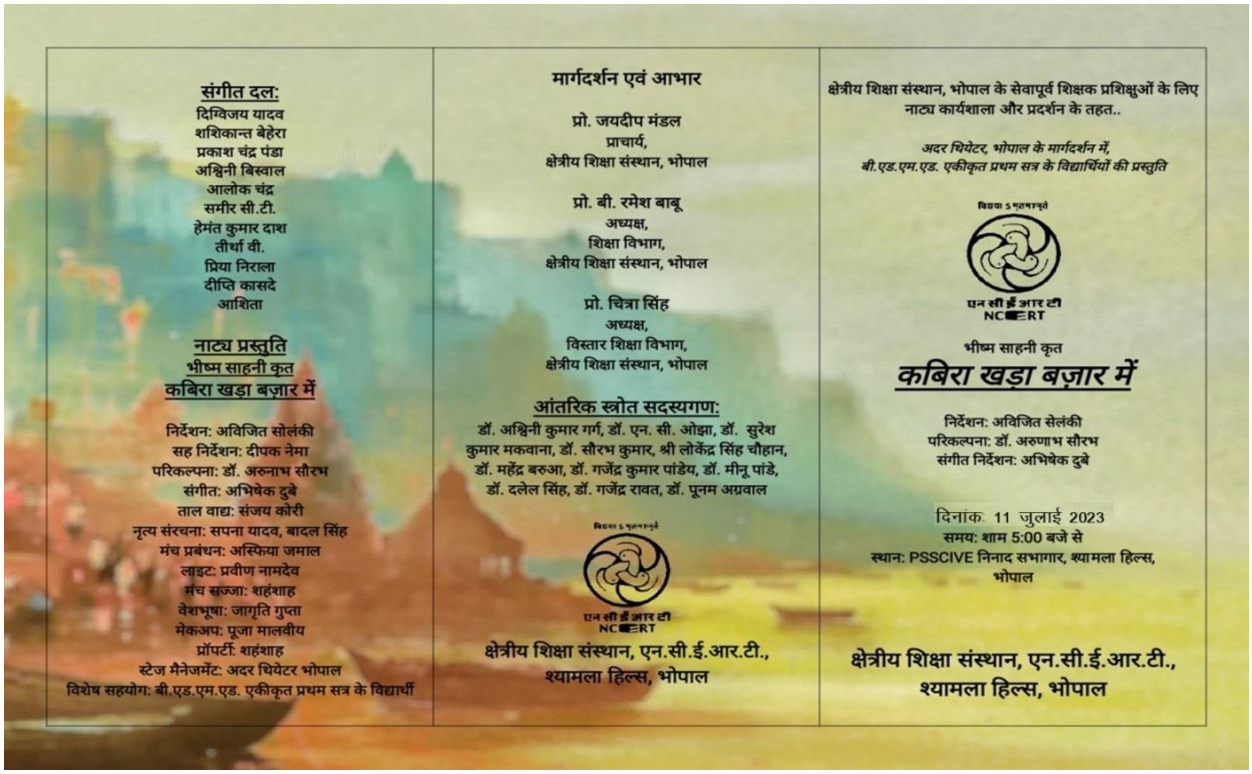

नाटक के बारे में

भीष्म साहनी कृत 'कबिरा खड़ा बज़ार में' कबीर के एक मूल्यवान व्यक्तित्व को प्रस्तुत करनेवाली बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है। सुविख्यात प्रगतिशील कथाकार भीष्म साहनी की 'हानूश' के बाद यह दूसरी नाट्य-रचना थी, जिसे हिन्दी रंगमंच पर व्यापक प्रशंसा प्राप्त हुई है।

कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी जीवन्तता के साथ मौजूद है। साथ ही इसमें यह भी उजागर हुआ है कि कबीर की साहित्यिकता सामाजिक जड़ता को तोड़ने का ही एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। कृति से गुजरते हुए पाठक कबीर के इस संघर्ष को उसकी तमाम तत्कालीन सामाजिकता के बावजूद समकालीन भारतीय समाज की विभिन्न विकृतियों से सहज ही जोड़ पाता है।

संक्षेप में कहें तो भीष्म साहनी की यह नाट्यकृति मध्ययुगीन वातावरण में संघर्ष कर रहे कबीर को—उनके पारिवारिक और सामाजिक सन् दर्भों सहित—आज भी प्रासंगिक बनाती है।

निर्देशक के बारे में:

विगत १५ वर्षों से रंगकर्म में सक्रिय अविजित सोलंकी अदर थिएटर के संस्थापक सदस्य हैं। रंगकर्म की शुरुआत भोपाल में प्रसिद्ध निर्देशक अलखनन्दन के साथ। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ रंगमंच का अनुभव। मप्र नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच से एक वर्षीय डिप्लोमा एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली से निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ तीन वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा। बतौर निर्देशक देश भर में विभिन्न समुदायों के साथ कार्यशालाओं का संचालन एवं नाटकों का निर्देशन। आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में डाकघर, एंटिगनी, बड़े बड़े पंखों वाला बूढ़ा, कला धब्बा बादल की तरह आ रहा है, द लोअर डेप्थ्स, अधांतर आदि प्रमुख हैं।

आपके नाटक 'काला धब्बा बादल की तरह आ रहा है' को प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह 'इंटर्नेशनल थिएटर फ़ेस्टिवल ऑफ़ केरला' एवं 'भारत रंग महोत्सव' में सराहा गया। 'रंगमंच एवं हिंसा' पर शोध हेतु राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली द्वारा वर्ष २०१९ में एकवर्षीय अध्येतावृत्ति एवं रंगमंच में नवाचार हेतु साहित्यिक संस्था स्पंदन द्वारा स्पंदन युवा पुरस्कार २०१९। नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, एसटीएफएक्स यूनिवर्सिटी (कनाडा), राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय(विस्तार विभाग), मप्र नाट्य विद्यालय में बतौर अतिथि व्याख्याता अध्यापन।

वर्तमान में भोपाल स्थित टैगोरे स्कूल ऑफ ड्रामा में सहायक प्राध्यापक के रूप में अध्यापन एवं एकलव्य संस्था के साथ शिक्षा में रंगमंच विषय पर शोध जारी है।

पात्र परिचय

कबीर : रौशन
लोई : बादल तिवारी
रैदास : रवि
सेना : रश्मिबाला
पीपा: श्रद्धांजलि
बशीरा: अजीत
एक भक्त: परवेज आलम
सिकंदर लोदी: गुरमीत परमार
कोतवाल: प्रणव पवार
अधिकारी: श्वेता
मौलवी: अमूल
साथी 1: परवेज
साथी 2: प्रकाश
कायस्थ: सुचरिता
शेख: राजा गणेश
भिकारी: देवयानी

सिपाही 1: कल्याण
सिपाही 2: दिब्यज्योति
सिपाही 3: पवित्र
महंत: रागेश्वरी
साधु: सद्भावना
चेला 1: साकेत
चेला 2: पंकज
चेला 3: पवित्र
नागरिक 1: ऋषभ
नागरिक 2: अदिति
नागरिक 3: आकांक्षा
नाई: दुर्गेश
लड़का 1: सुधांशु
लड़का 2: आलोक यादव

भक्तगण(झांकी):
दुर्गेश, आलोक यादव, आंचल, प्राची, सुधांशु, पवित्र, हेमंत, शिवानी, ऋचा सांभरि, क्रिस्टी, निशा, सुप्रीत

विवाह नृत्य:
ऋचा सांभरि, आंचल बेहेरा, नेहा गंधर्व, सुभाषिनी, निशा, सुप्रीत, आसिमा, क्रिस्टी, राजलक्ष्मी, तनिष्क, श्रृद्धांजलि, श्वेता

झीनी झीनी नृत्य समूह:
मिनिषा के., सुधांशु, ऋचा सांभरी, आसिमा, प्राची, नेहा, सुप्रीत, आकांक्षा, आंचल बहेरा, हेमंत, क्रिस्टी, दुर्गेश, निशा, श्रृद्धांजलि, रवि, राजलक्ष्मी, शिवानी, सुभाषिनी, श्वेता

Feb 1, 2023, 12:04

एक भारत श्रेष्ठ भारत
Feb 1, 2023, 11:38

दोहे एवं गीत गाकर दिखाया कबीर का प्रेरक जीवन

जागरण सिटी रिपोर्टर। मध्यकाल में तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर का जीवन आज भी समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। उनके निर्भीक,दृढ़, फक्कड़ और मस्त मौला व्यक्तित्व ने समाज में एक नया दर्शन दिया था। गुरुवार को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा मंचित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' में कबीर का वहीं अंदाज और उसमें छुपी सीख नजर आई। इसमें 70 कलाकारों ने दोहों और गीतों को गाकर उनके आदर्श जीवन को प्रस्तुत किया। भीष्म साहनी द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी ने किया। नाटक में दिखाया गया मध्यकाल में कि कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच थी। कबीर की साहित्यिकता, सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। नाटक में बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं।

नाटक में नजर आया 'कबीर' का जीवन दर्शन

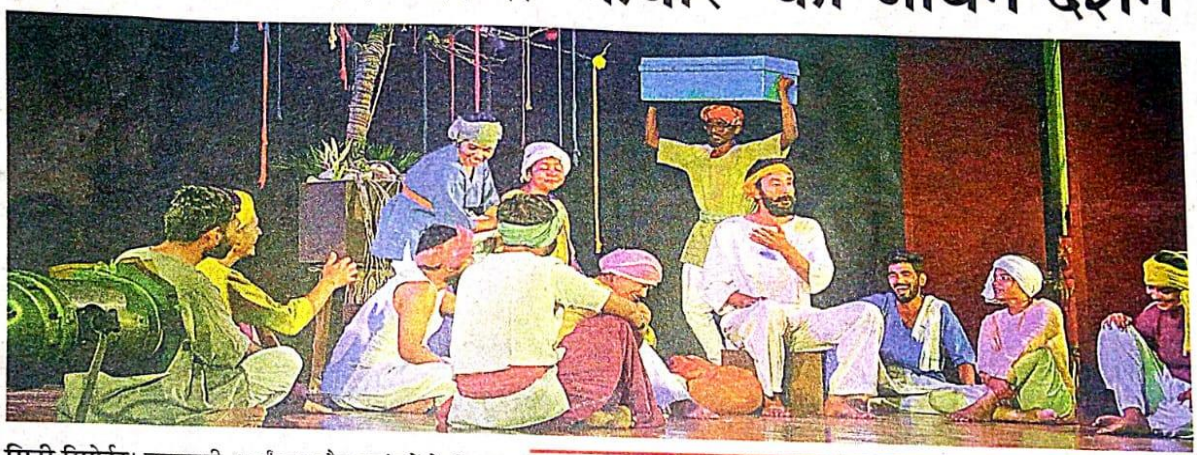

सिटी रिपोर्टर। तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर का जीवन आज भी समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। उनके निर्भीक, दृढ़, फक्कड़ और मस्त मौला व्यक्तित्व ने समाज में एक नया दर्शन दिया था। गुरुवार को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा मंचित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' का वहीं अंदाज और उसमें छिपी सीख नजर आई। इसमें 70 कलाकारों ने दोहों और गीतों को गाकर उनके आदर्श जीवन को प्रस्तुत किया। भीष्म साहनी द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी ने किया।

'कबीरा खड़ा बाजार में' छिपी सीख नजर आई

नाटक में दिखाया गया मध्यकाल में कि कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़पन और युग प्रवर्तक सोच थी। कबीर की साहित्यिकता, सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। नाटक में बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं। उस काल की धर्मांधताएं, अनाचार और तानाशाही आदि के खिलाफ कबीर ने सत्यनिष्ठ और प्रखर व्यक्तित्व को दिखाकर समाज का मार्गदर्शन किया था।

Bhopal :क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का मंचन

भीष्म साहनी लिखित नाटक में तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष की गाथा है, नाटको को दर्शकों की बहुत सराहना मिली

By श्रुति कुशवाहा Last updated **Feb 3, 2023**

Share Facebook Twitter Telegram Follow us on Google News

Kabira khada bazar me : भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में भीष्म साहनी लिखित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का आयोजन हुआ। बेपरवाह, निर्भीक, दृढ़ और फक्कड़ व्यक्तित्व वाले मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन को प्रभावित करता रहा है। उस युग की तानाशाही धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर आज भी हमारे बीच एक स्थायी और प्रेरक मूल्य की तरह स्थापित हैं। इसी कारण आज भी कबीर के पदों को समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। भीष्म साहनी कृत 'कबिरा खड़ा बज़ार में' युग प्रवर्तक कबीर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाली बहुमंचित और चर्चित

नाट्यकृति है। सुविख्यात प्रगतिशील कथाकार भीष्म साहनी की इस नाट्य-रचना को हिन्दी रंगमंच पर व्यापक प्रशंसा मिली है। इस नाटक में संस्थान के B.Ed., M.Ed. एकीकृत के छात्र छात्राओं ने मंचन किया!

कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी जीवंतता के साथ मौजूद है। कबीर की साहित्यिकता सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। यह नाट्यकृति मध्ययुगीन वातावरण में संघर्ष कर रहे कबीर को उनके पारिवारिक और सामाजिक सन्दर्भों सहित आज भी प्रासंगिक बनाती है। इस नाटक के माध्यम से बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं। नाटक में उस काल की धर्मांधता, अनाचार और तानाशाही के खिलाफ कबीर के निर्भीक, सत्यनिष्ठ और प्रखर व्यक्तित्व को दिखाने तथा कबीर को जीवंत करने का बेहतर प्रयास किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के मार्गदर्शन में किया गया। नाटक की परिकल्पना डॉ. अरुणाभ सौरभ द्वारा तैयार की गई, डॉक्टर अरुणाभ सौरभ संस्थान में समय-समय पर अपने मार्गदर्शन में रंगमंच का आयोजन कराते रहते हैं जिससे छात्र छात्राओं को मानव स्वभाव का सम्यक ज्ञान, व्यक्तित्व का विकास, संवाद कौशलों के विकास के अवसर प्राप्त होता है। शिक्षण प्रशिक्षण शास्त्र के विद्यार्थियों में नाटक द्वारा रचनात्मक सोच पाठ्यवस्तु को सक्रिय और आकर्षक बनाने के कौशलों का विकास हुआ है। नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी द्वारा किया गया। पिछले १५ वर्षों से रंगकर्म में सक्रिय अविजित सोलंकी अदर थिएटर के संस्थापक सदस्य हैं। रंगकर्म की शुरुआत भोपाल में प्रसिद्ध निर्देशक अलखनन्दन के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ रंगमंच का अनुभव है। मप्र नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच से एक वर्षीय डिप्लोमा एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली से निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ तीन वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा। बतौर निर्देशक देश भर में विभिन्न समुदायों के साथ कार्यशालाओं का संचालन एवं नाटकों का निर्देशन किया है। आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में डाकघर, एंटिगनी, बड़े बड़े पंखों वाला बूढा, कला धब्बा बादल की तरह आ रहा है, द लोअर डेप्थ्स, अधांतर आदि प्रमुख हैं! नाटक में संगीत अभिषेक दुबे द्वारा दिया गया। कलाकारों ने कबीर के दोहों और गीतों के माध्यम से नाटक में समां बांध दिया! यह नाटक समाज की कुरीतियों पर एक प्रहार है यह प्रस्तुति लंबे समय तक लोगों को याद रहेगी।

Feb 24, 2023

विद्यार्थियों की टिप्पणी

"कबिरा खड़ा बज़ार में " भीष्म साहनी द्वारा रचित बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है , जिसमें कबीर दास के मूल्यवान व्यक्तित्व को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक के मंचन में मुझे लोई (कबीर की पत्नी) का किरदार निभाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं कार्यशाला के संपूर्ण सदस्यों के प्रति

अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। जीवन में जाने अनजाने हम कई किरदार निभाते हैं, खुद को बहुत से पात्रो में ढाल लेते हैं पर किसी नाटक के पात्र में खुद को ढालना और अभिनय करना जीवन जीने से किस तरह समानांतर भी है और भिन्न भी इसकी स्पष्टता का विकास कार्यशाला के संपूर्ण कार्यकाल के दौरान मुझमें होता रहा। इस नाटक के माध्यम से मुझे पंद्रहवीं शताब्दी के काशी में भ्रमण करने का, तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था एवं कबीर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओ को समझने का बहुमूल्य अवसर प्राप्त हुआ, साथ ही साथ शिक्षा एवं नाट्यकला का समावेश भी देखने को मिला। शिक्षा में नाट्यकला का महत्वपूर्ण योगदान एवं स्थान है जिसे नकारा नहीं जा सकता और दोनों ही मनुष्य के विकास मे उपयोगी अवयव है, जिनके समागम को सहजने व सहयोग की आवश्यकता है। अंत में मैं इस कार्यशाला के संपूर्ण अनुभव को कुछ पंक्तियो में बांधना चाहूँगी :

"*कई कहानियों से गुजर कर न जाने कितने किस्से बनाती हूँ।*

हर रोज किसी की कहानी में, मैं अपना किरदार निभाती हूँ।

बस यू ही आपनी कहानी लिखती जाती हूँ।"

-बादल तिवारी (लोई)

Today I woke up by mashing my eyes in the dream of Kabir. And flashing the memories of past 11 days from reading script to practicing songs and exercises of following hands, going here and there makings home to Storms the audition and choosen as Kabir. I've no words to thank our respected Avijit sir who gives me this 3P's - positivity, passionate and patience. Asfiya mam for your direction and suggestions during practice. Dubey sir encouraging me for the role.Deepak sir treating as younger brother.Shanshah sir for guidance. Badal sir and sapna mam for dance (jo ki mai bahut achha kiya 🤭) jagriti mam and mam who did my make-up(sorry mam name yaad nhi aa rha).Dr. Anurabh Saurabh sir who made all of this possible and the last but not the least all my dear friends. Thanks all of you I'm lacking of words. Some are becoming impatient what Roushan is writing 😅. Thats all thank you.....

Roushan- Kabir

कथा सार -

"दास्तान-ए- झाँसी" एक मनोरंजक ऐतिहासिक नाटक है जो झाँसी की प्रसिद्ध रानी रानी लक्ष्मीबाई की प्रेरक कहानी को जीवंत करता है। औपनिवेशिक भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर प्रकाश डालता है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व किया।

निर्देशक के बारे में -

अरुणाभ सौरभ
जन्म : 9 फरवरी,1985,चैनपुर, सहरसा (बिहार)
शिक्षा
बनारस हिंदू युनिवर्सिटी से हिन्दी में एम.ए, जामिया मिल्लिया इस्लामिया से बी.एड, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय से पीएच.डी, नेट (जे.आर.एफ) अंग्रेज़ी साहित्य में एम. ए
तीन दर्जन से नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन
प्रकाशित कृतियाँ :
हिन्दी में -
दिन बनने के क्रम में (कविता संग्रह, 2014 भारतीय ज्ञानपीठ)
लम्बी कविता का वितान (आलोचना पुस्तक) विजया बुक्स दिल्ली, 2017
किसी और बहाने से (कविता संग्रह) 2021, भारतीय ज्ञानपीठ,
मथिली में प्रकाशित कृतियाँ : -
एतबे टा नहि (मैथिली कविता संग्रह 2011), नवारम्भ पटना
तेँ किछु आर (मैथिली कविता संग्रह 2018)
अनुवाद
कन्नड़ के वचन साहित्य का अनुवाद
जैसे अंधरे में चाँद मैथिली कवि तारानन्द वियोगी की कविताओं का अनुवाद, रू पुस्तिका से 2013
असमिया कवयित्री कविता कर्मकार की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद
पुरस्कार एवं सम्मान:
भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली का नवलेखन पुरस्कार,साहित्य अकादेमी नई दिल्ली का युवा पुरस्कार,माहेश्वरी सिंह महेश स्मृति ग्रंथ पुरस्कार पटना,महेश अंजुम स्मृति युवा कविता सम्मान,भोपाल स्मारक अस्पताल एवं शोध केंद्र द्वारा साहित्य श्री अलंकरण

विद्यया ऽमृतमश्नुते

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल के
बीए. बीएड. पांचवें सत्र के विद्यार्थियों
की प्रस्तुति

दास्तान- ए- झाँसी

परामर्श -प्रो. जयदीप मंडल, प्राचार्य

स्थान
निनाद सभागार
PSSCIVE
भोपाल

दिनांक
29/12/2023

समय
04:30 PM

लेखक : अमिताभ श्रीवास्तव
नाट्यालेख : हरिकेश मौर्य
निर्देशन : अरुणाभ सौरभ
परिकल्पना : रमण कुमार

विशेष सहयोग : मैलोरंग, दिल्ली

स्रोत विशेषज्ञ

डॉ प्रकाश झा, रमण कुमार, हरिकेश मौर्य, मार्टिना मेधी, अब्दुस अंसारी
रोहित श्रीवास्तव, हर्ष मनु, साक्षी झा, शाहिल कुमार, राजेश पाठक

पात्र परिचय

निष्ठा भोई - झाँसी की रानी
मैत्रेयी - रानी लक्ष्मी बाई
प्रतिक्षा काले - मनु
मंथन माटे - गंगाधर राव
वंदना सामल - वीर सिंह देव, हीरा
सिद्धार्थ भाटी - बाजीराव, रघुनाथ सिंह
युवराज सिंह - मोरोपंत
महेश गायकवाड - तात्यादीक्षित
श्रवण सिंह अहिरवार - राव साहब
कृष्णव्रत पांडेय - नाना साहब
सुनील शर्मा - लक्ष्मण राव, लाल भाव , हाथी
स्तुति सिंह - राजा I , सूत्रधार
सृष्टि शर्मा -राजा II,
प्रात्वी देवे - राजा III
लक्ष्य पटेल - ह्युरोज़, हाथी
सागरिका सरोज - स्टुअर्ट, प्रहरी
संबोधी गौतम कांबले - एलिस
नेहा केरु पोरजे - झल्कारी बाई
मानसी कुरै - जमुना
मधुरा राजे - गंगा
दीप्ति कुमारी - काशी
खिलेश्वरी यादव - मुंदर
सृष्टि जैन - सूत्रधार
अनु यादव - सूत्रधार

श्वेता रानी - सूत्रधार
अंजली नागर - सूत्रधार, अंग्रेज
विद्या कटरे - अंग्रेज, प्रहरी
प्रफुल शंकर बोरकर - सूत्रधार, गुप्तचर, हाथी
समृद्धि मिश्रा - सूत्रधार, प्रहरी
रितेश विश्वकर्मा - नत्थेखान, हाथी, प्रहरी
अनिल सिसोदिया - प्रहरी, हाथी
मोनिका बनवासी - प्रहरी, संगीत कोरस
जागृति झा - संगीत कोरस
अंजली भवेदी - संगीत कोरस
जयेश काळे - संगीत कोरस
मयूरी किशोर देशपांडे - नृत्य कोरस

संरक्षण- प्रो. जयदीप मंडल, प्राचार्य
प्रो. बी रमेश बाबू (अध्यक्ष शिक्षा विभा)
प्रो. निधि तिवारी (अध्यक्ष भाषा विभाग)
प्रो० चित्रा सिंह (अध्यक्ष, विस्तार शिक्षा विभाग)
प्रो. रश्मि सिंघई (अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग)
श्री महेश आसुहानी (प्रशासनिक अधिकारी)

आंतरिक स्रोत विशेषज्ञ
डॉ. सुरेश कुमार, मकवाणा
डॉ. अलका सिंह
डॉ. रामझलक यादव
डॉ. महेन्द्र बरुआ
डॉ. धारिणी

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्य प्रस्तुति 'दास्तान-ए-झाँसी'' का मंचन दिनांक 29 दिसंबर 2023 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई के निनाद सभागार श्यामला हिल्स भोपाल में किया जा रहा है । नाटक 'दास्तान-ए-झाँसी' का लेखन अमिताभ श्रीवास्तव ने और नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया है। प्रस्तुति बी.ए बी.एड पाँचवा सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे मैलोरंग नई दिल्ली के सहयोग से किया गया। नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है । दास्तान के शिल्प में एक नई भाव-भंगिमा और अर्थ - छवि के साथ झाँसी नगर और लक्ष्मीबाई हमारे सामने आती है ।

दास्तान-ए-झांसी एक ऐतिहासिक नाटक है यह नाटक नारी शक्ति को केंद्र में रख कर बनाया गया है नाटक कि शुरुआत कथावाचक करता है और कथा को आगे बढ़ता है नाटक में कई जगह सुभद्रा कुमारी चौहान कि कविता झांसी वाली रानी से कुछ पंक्तियों को संगीत में पिरो कर उसका प्रयोग किया गया है जो इस नाटक को एक संगीतमय प्रस्तुति का रूप देती है। नाटक वीर सिंह जूदेव द्वारा बलवंत नगर के किले के निर्माण से लेकर बलवंत नगर का नाम झाई सी यानी कि झांसी कैसे पड़ा तक की यात्रा दिखाता है साथ ही साथ यह नाटक मनु से झाँसी की प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई बनने कि प्रेरक कहानी को जीवंत करता है। गुलाम भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर आधारित है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व किया। वे महिला सशक्तिकरण की प्रतिमूर्ति थीं। आज महिलाओं के लिए वह सशक्तिकरण और समानता की मूर्ति हैं। वह हमें सभी बाधाओं के बावजूद अपने लिए, अपने अधिकारों, अपनी स्वतंत्रता और अपनी आवाज के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में यह नाटक दस दिवसीय कार्यशाला में तैयार किया गया। इस नाट्य कार्यशाला में रमण कुमार, डॉ प्रकाश झा जैसे विशेषज्ञों ने रंगमंच के तमाम बारीकियों मसलन अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना और नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण दिया गया। नाटक का निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया। कार्यशाला में संगीत प्रशिक्षक राजेश पाठक, अब्दुस अंसारी,रोहित कुमार,नृत्य प्रशिक्षक मार्टिना,साक्षी झा और मंच पार्श्व के लिए, हर्ष मनु, हरिकेश मौर्य, शाहिल गुप्ताआदि शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षा के अध्यक्ष प्रोफेसर चित्रा सिंह तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के साथ साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही।

मीडिया कवरेज

(दास्तान-ए-झाँसी' का कवरेज)

पत्रिका

WEEKEND पत्रिका plus

पत्रिका. भोपाल, शनिवार, 30 दिसंबर 2023 www.patrika.com

#DramainCity इतिहास, मिथक और उस वक्त के हालात, तीनों को एक साथ नाटक में किया पेश

लक्ष्मीबाई की शौर्यगाथा 'दास्तान-ए-झांसी' देख भाव विभोर हुए लोग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के बीए-बीएड पांचवें सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने किया अभिनय

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. 166 साल पहले रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता व साहस का जो उदाहरण प्रस्तुत किया था, उसकी कल्पना मात्र से हर भारतीय में गर्व का संचार होने लगता है। वो आज भी हमें सभी बाधाओं के बावजूद अपने अधिकारों, स्वतंत्रता के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती हैं। मनु से झांसी की रानी बनने तक की प्रेरक कहानी को शुक्रवार को एक बार फिर से जीवंत किया गया। मौका था क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में प्रस्तुत नाटक 'दास्तान-ए-झांसी' का। इसे 10 दिन की नाट्य कार्यशाला में तैयार किया गया था। नाटक का मंचन पीएसएससीआईवीआई के निनाद सभागार में किया गया। इसका लेखन अमिताभ श्रीवास्तव ने और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया।

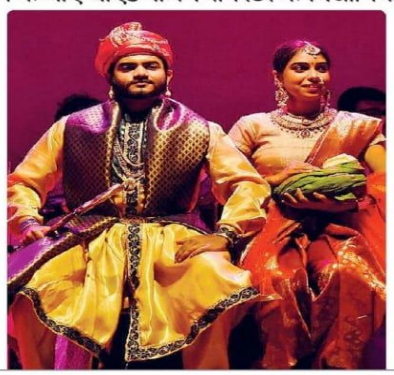

मनु से लेकर झांकी की रानी तक का दिखाया सफर

नारी शक्ति पर केंद्रित इस नाटक की शुरुआत कथावाचक अपने अंदाज में करता है। वहीं दर्शकों को कथा सुनाता है, उन्हें बांध कर रखता है। नाटक में कई जगह सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता झांसी वाली रानी से कुछ पंक्तियों को संगीत में पिरो कर उसका प्रयोग किया गया है जो इस नाटक को एक संगीतमय प्रस्तुति का रूप देता है। इस नाटक में रानी लक्ष्मीबाई यानी मनु का बचपन जहां बीता, यानी कानपुर स्थित बिठूर किला से लेकर उनके "छबीली" बनने और झांसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ विवाह का बड़ा सुंदर मंचन किया गया।

हर दृश्य को कलाकारों ने किया जीवंत

नाटक में दिखाया गया कि किस तरह लक्ष्मीबाई के नवजात पुत्र की मृत्यु होती है। पुत्र की मृत्यु के शोक में डूबे पिता का दुनिया छोड़कर चला जाना और फिर अंग्रेजी हुकूमत द्वारा झांसी को अपने कब्जे में लेना और इसके बाद लक्ष्मीबाई द्वारा अपने राज्य को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए अपने प्राण न्योछावर करना... हर दृश्य को मंच पर जीवंत किया गया। गुलाम भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर आधारित है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व किया। बता दें कि 10 दिवसीय कार्यशाला में तैयार किए गए इस नाटक में निष्ठा भोई, मैत्रेयी, प्रतिक्षा काले, मंथन माटे, वंदना सामल और सिद्धार्थ भाटी ने अहम किरदार निभाया है।

30/12/2023 | Bhopal | Page : 15
Source : https://epaper.patrika.com/

पत्रिका और दैनिक भास्कर में कवरेज

CITY ACTIVITY

कोहेफिजा | हमीदिया रोड | भारत टाकीज | चौक बाजार | जहांगीराबाद | एयरपोर्ट रोड | गांधी नगर |

आरआईई...10 दिन में स्टूडेंट्स ने तैयार किया दास्तान-ए-झांसी

50 स्कूली स्टूडेंट्स ने मंच पर दिखाई बलवंत नगर किले का नाम झांसी पड़ने की कहानी

सिटी रिपोर्टर : भोपाल

रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (आरआईई) में शुक्रवार को डांस ड्रामा दास्तान-ए-झांसी खेला गया। करीब एक घंटे की इस प्रस्तुति की खास बात थी कि इसमें स्कूल के 50 स्टूडेंट्स ने एक साथ मंच पर प्रस्तुति दी। ऐसे में इतने सारे स्टूडेंट्स को प्रस्तुति के दौरान पर्दे के पीछे और ग्रीन रूम में शांत रखना टीचर्स के लिए अपनेआप में एक चैलेंज था।

अमिताभ श्रीवास्तव द्वारा लिखित इस डांस ड्रामा में नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया। नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ पिरोया गया। नारी शक्ति को केंद्र में रखकर बनाए गए नाटक की शुरुआत कथावाचक से होती है, जो बताता है कि आखिर ओरछा के राजा वीर सिंह जूदेव के बलवंत नगर में बने किले का नाम झांसी क्यों रखा? गुलाम भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर आधारित है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व किया। नाट्य कार्यशाला में रमण कुमार, डॉ. प्रकाश झा ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया।

राजा को झाईं सी शब्द पसंद आया...

ऐतिहासिक ओरछा किले पर एक दिन राजा वीर सिंह जूदेव अपने पड़ोसी राज्य जैतपुर के राजा के साथ किले के बुर्ज पर बैठे हुए थे। दोनों आपस में बातें कर रहे थे। इस दौरान जैतपुर के राजा को ओरछा किले से बलवंत नगर में बना किला थोड़ा सा दिख रहा था, इसलिए उन्होंने 'झाईं सी' कहा। इसका बुंदेली में मतलब बिल्कुल थोड़ा सा होता है। राजा वीर सिंह को 'झाईं सी' शब्द बहुत पसंद आया। इसके बाद यह शब्द बलवंत नगर में काफी प्रचलित हो गया और धीरे-धीरे यह झांसी बन गया। इस तरह बलवंत नगर को झांसी नया नाम मिल गया।

अमर उजाला

गुलाम भारत पर आधारित नाटक निडर महिला के जीवन और संघर्ष की कहानी

नाट्य कार्यशाला ● क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में नाटक दास्तान-ए-झांसी का मंचन

नाट्य कार्यशाला मे शुक्रवार को विद्यार्थियो ने नाट्य प्रस्तुति 'दास्तान-ए-झांसी" का मंचन किया। दृश्य मे झांसी की रानी के विवाह को दिखाया गया है। ● प्रवीण दीक्षित

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्य प्रस्तुति 'दास्तान-ए-झांसी' का मंचन शुक्रवार शाम को श्यामला हिल्स स्थित पीएसएससीआइवीआइ के निनाद सभागार में किया गया। नाटक 'दास्तान-ए-झांसी' का लेखन अमिताभ श्रीवास्तव और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया है। नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य और परिकल्पना रमण कुमार की थी।

प्रस्तुति बीए बीएड पांचवां सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे मैलोरंग नई दिल्ली के सहयोग से किया गया। नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है। दास्तान के शिल्प में एक नई भाव भंगिमा और अर्थ- छवि के साथ

युद्ध के दौरान झांसी की रानी पर पीछे से हमला करते दिखाया गया है। ● नवदुनिया

झांसी नगर और लक्ष्मीबाई हमारे सामने आती है । दास्तान-ए-झांसी एक ऐतिहासिक नाटक है यह नाटक नारी शक्ति को केंद्र में रख कर बनाया गया है।

झांसी के नामकरण की यात्रा को दिखाया : नाटक की शुरुआत कथावाचक करता है और कथा को आगे बढ़ाता है। नाटक में कई जगह सुभद्रा कुमारी चौहान कि कविता झांसी वाली रानी से कुछ पंक्तियों को संगीत में पिरो कर उसका प्रयोग किया गया है, जो इस नाटक को एक संगीतमय प्रस्तुति का रूप देती है।

नाटक वीर सिंह जूदेव द्वारा बलवंत नगर के किले के निर्माण से लेकर बलवंत नगर का नाम झाई सी यानी कि झांसी कैसे पड़ा तक की यात्रा दिखाता है। यह नाटक मनु से झांसी की प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई बनने कि प्रेरक कहानी को जीवंत करता है। गुलाम भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर आधारित है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में नेतृत्व किया। आज महिलाओं के लिए वह सशक्तिकरण और समानता की मूर्ति हैं। वह हमें अधिकारों, स्वतंत्रता और अपनी आवाज के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती है।

नव दुनिया/नई दुनिया

किसी न किसी सार्वजनिक महत्व के विषय पर होती लेकर अरुण कमल तक कौन-सा उल्लेखनीय है।

शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्य दास्तान-ए-झाँसी का मंचन

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्य प्रस्तुति दास्तान-ए-झाँसी का मंचन दिनांक 29 दिसंबर 2023 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई के निनाद सभागार श्यामला हिल्स भोपाल में किया जा रहा है । नाटक दास्तान-ए-झाँसी का लेखन अमिताभ श्रीवास्तव ने और नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया है। प्रस्तुति बी.ए बी.एड पाँचवा सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे मैलोरंग नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है । दास्तान के शिल्प में एक नई भाव - भंगिमा और अर्थ - छवि के साथ झाँसी नगर और लक्ष्मीबाई हमारे सामने आती है ।

दास्तान-ए-झांसी एक ऐतिहासिक नाटक है यह नाटक नारी शक्ति को केंद्र में रख कर बनाया गया है नाटक कि शुरूआत कथावाचक करता है और कथा को आगे बढ़ता है नाटक में कई जगह सुभद्रा कुमारी चौहान कि कविता झांसी वाली रानी से कुछ पंक्तियों को संगीत में पिरो कर उसका प्रयोग किया गया है जो इस नाटक को एक संगीतमय प्रस्तुति का रूप देती है। नाटक वीर सिंह जूदेव द्वारा बलवंत नगर के किले के निर्माण से लेकर बलवंत नगर का नाम झाई सी यानी कि झांसी कैसे पड़ा तक की यात्रा दिखाता है साथ ही साथ यह नाटक मनु से झाँसी की प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई बनने कि प्रेरक कहानी को जीवंत करता है। गुलाम भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक एक निडर महिला के जीवन और संघर्ष पर आधारित है, जिसने सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व किया। वे महिला सशक्तिकरण की प्रतिमूर्ति थीं। आज महिलाओं के लिए वह सशक्तिकरण और समानता की मूर्ति हैं। वह हमें सभी बाधाओं के बावजूद अपने लिए, अपने अधिकारों, अपनी स्वतंत्रता और अपनी आवाज के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में यह नाटक दस दिवसीय कार्यशाला में तैयार किया गया। इस नाट्य कार्यशाला में रमण कुमार, डॉ प्रकाश झा जैसे विशेषज्ञों ने रंगमंच के तमाम बारीकियों मसलन अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना और नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण दिया गया। नाटक का निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया। कार्यशाला में संगीत प्रशिक्षक राजेश पाठक, अब्दुस अंसारी,रोहित कुमार,नृत्य प्रशिक्षक मार्टिना,साक्षी झा और मंच पार्श्व के लिए , हर्ष मनु, हरिकेश मौर्य, शाहिल गुप्ताआदि शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षा के अध्यक्ष प्रोफेसर चित्रा सिंह तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के साथ साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही।

राष्ट्रीय अखबार 'जनसंदेश टाइम्स' लखनऊ में प्रकाशित दास्तान-ए-झाँसी' का कवरेज

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपालक कार्यक्रम मे नाटक 'दास्तान-ए-झांसी'क भेल मंचन

आवाज डेस्क | क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपालक सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षु लेल नाट्य कार्यशाला आ प्रदर्शनक तहत नाट्य प्रस्तुति 'दास्तान-ए-झाँसी' केर मंचन दिनांक 29 दिसंबर 2023 कैँ पी.एस. एस.सी.आई.वी.आई केर निनाद सभागार श्यामला हिल्स भोपाल मे कएल गेल। एहि नाटकक लेखन अमिताभ श्रीवास्तव आ नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार आ निर्देशन अरुणाभ सौरभ कयलनि। प्रस्तुति बी.ए बी.एड पांचम सेमेस्टरक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानक विद्यार्थीक रहल आ जेकरा मैलोरंग नई दिल्लीक सहयोग सँ कयल गेल।

नाटक मे इतिहास, मिथक आ हमर समय तीनूक संगहि प्रस्तुतक रचनात्मक आयाम देल गेल अछि। दास्तानक शिल्प मे एकटा नव भाव-भंगिमा आ अर्थ-छविक संग झाँसी नगर आ लक्ष्मीबाई दर्शक सोझा अबैत अछि।

जनतब दी जे दास्तान-ए-झांसी एकटा ऐतिहासिक नाटक अछि ई नाटक नारी शक्ति कैँ केंद्र मे राखि क' बनाओल गेल अछि। नाटकक प्रारंभ कथावाचक करैत अछि आ कथा कैँ आगू बढ़बैत अछि। एहि नाटक मे बहुतो जगह सुभद्रा कुमारी चौहानक कविता झांसी वाली रानी सँ किछु पाँति कैँ संगीतबद्ध कयल गेल अछि, जे एहि नाटक कैँ एकटा संगीतमय प्रस्तुतिक रूप दैत अछि। नाटक वीर सिंह जूदेव द्वारा बलवंत नगरक किला निर्माण सँ ल' क' बलवंत नगरक नाम झाई सी यानी कि झांसी कोना पड़ल तकर यात्रा देखबैत अछि संगहि ई नाटक मनु सँ झाँसीक प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई बनबाक प्रेरक कहानी कैँ जीवंत करैत अछि। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल मे ई नाटक दस दिवसीय कार्यशाला मे तैयार कयल गेल। नाट्य कार्यशाला मे रमण कुमार, डॉ प्रकाश सन विशेषज्ञ रंगमंचक अवयव अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना आ नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण देल गेल। नाटकक निर्देशन अरुणाभ सौरभ केलनि। कार्यशाला मे संगीत प्रशिक्षक राजेश पाठक, अब्दुस अंसारी, रोहित कुमार, नृत्य प्रशिक्षक मार्टिना, साक्षी झा आओर मंच पार्श्वक लेल हर्ष मनु, हरिकेश मौर्य, शाहिल गुप्ता आदि शामिल रहलाह। कार्यक्रमक समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षाक अध्यक्ष प्रोफेसर चित्रा सिंह तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल जीक संग क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानक सभ संकाय सदस्यक उपस्थिति महत्वपूर्ण रहल।

मिथिला आवाज़, पाक्षिक, ग्रेटर नोएडा, ऊ.प

भेपाल मे कयल गेल
दास्तान-ए झाँसीक मंचन

क्षे

म.प्र ब्रेकिंग्नि न्यूज़ और समदिया मिथिला

MP BREAKING NEWS देश के दिल की हर ख़बर

Home > मध्यप्रदेश > भोपाल > The Play Dastan E Jhansi Staged At Regio

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में नाटक 'दास्तान-ए-झाँसी' का मंचन, दर्शकों की भरपूर सराहना मिली

नाटक का लेखन अमिताभ श्रीवास्तव ने और नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया।

By श्रुति कुशवाहा — Updated on Dec 30, 2023 / 12:32 PM भोपाल

<u>विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया</u>

आदरणीय अरुणाभ सर,

आप सब लोगों का मार्गदर्शन और संकल्पित दूरदर्शी दृष्टि रही जो हमे बीते दस दिनों में इस मार्मिक और उत्कृष्ट वीर रस से पूर्ण नाट्य के लिए तैयार किया।। हमारे अभी तक के जीवन में ये सबसे उच्चतम अविस्मरणीय अनुभव है जो आपने हमे प्रदान किया और आपके मार्गदर्शन में संभव हो पाया🙏🏽।

।। हृदय से धन्यवाद ।।

-आपकी मैत्रयी

अरुणाभ सर आपके सानिध्य में रहते हुए ही हम इस नाटक को परिपूर्ण ढंग से सभी के समक्ष प्रस्तुत कर पाए हैं।आपने हम सभी विद्यार्थियों को कार्यशाला के दौरान कभी अकेला नहीं छोड़ा। और हमें मार्गदर्शन प्रदान किया।🙏 💐

-श्रवण सिंह अहिरवार